आपने लिखा

शैक्षणिक संदर्भ का अंक 77 हमारे महाविद्यालय में प्राप्त हुआ। इस अंक में मुझे कैरन हेडॉक का लेख 'विज्ञान सीखने और सिखाने में हमें क्या दिक्कतें आती हैं' बहुत आकर्षक और उपयोगी लगा। मैं पिछले चार वर्ष से शिक्षा महाविद्यालय में शिक्षा/विज्ञान प्रवक्ता के पद पर कार्यरत हूँ। हमें विज्ञान शिक्षण में छात्रों को पाठ बनाने और पढ़ाने के लिए तैयार करना पड़ता है। इस लेख ने मेरी आँखें खोल दीं। हम विज्ञान को तथ्यों पर आधारित करके पाठ को पढ़ाते हैं। इस लेख को मैंने समस्त छात्र-अध्यापकों को पढ़वाया और लेख की फोटोकॉपी करवाकर उनको दी ताकि आगे भी उनको इसका लाभ मिल सके। मैं इस लेख को आसपास के सभी स्कूलों में विज्ञान पढ़ाने वाले अध्यापकों को अपने स्वयं के खर्च पर पढ़ने के लिए भेज रहा हूँ।

मैं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की जीव विज्ञान, कक्षा बारहवीं की प्रायोगिक परीक्षा लेने जाता हूँ। इस वर्ष मैं दस-बारह स्कूलों में गया। वहाँ विज्ञान शिक्षकों से मिलकर उनकी समस्याओं को जाना और इस लेख की फोटोकॉपी सबको दी।

'संदर्भ' ने मेरी सोच और नज़रिए को बदला है। आप शिक्षा के क्षेत्र में बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। हमें इसका बहुत लाभ मिल रहा है।

मैं विज्ञान शिक्षण की और सामग्री पढ़ना चाहता हूँ। कृपया, मुझे इस सम्बन्ध में और जानकारी दीजिए।

विनोद कुमार सुथार (व्याख्याता)
जवाहर विद्यापीठ शि.प्र. महाविद्यालय,
कानोड, उदयपुर, राजस्थान

शैक्षणिक संदर्भ के अंक 79 में वैसे तो सब कुछ इस बार हटकर था। लगता है सम्पादकीय टीम सचेत रूप से परिवर्तन करना चाह रही है और इसमें सफल भी रही है।

कहानी 'स्कुल गाथा' के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ। चाहे कहानी कितनी भी पहले लिखी गई हो, उससे भी पहले की लगती है, वास्तविक घटनाओं की दृष्टि से, पर मनोवैज्ञानिक धरातल पर यह आज भी सच है। और फिर हम पढ़कर जो सोचते हैं, वह तो लेखक ने अपने कहानी संग्रह का नाम ही रखा है - यह ट्रेजेडी क्यों हुई। हमारी शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा विभाग का संचालन किसी भी दूसरे विभाग की तरह होता है, जबकि इसका काम मानव के छोटे-छोटे बच्चों में सद्गुणों और काबिलियत का निर्माण करना है। मुझे लगता है कि शिक्षा के उद्देश्य कुछ और हैं और व्यवस्था (शासन व्यवस्था) को अपने आपको बनाए रखने के लिए शिक्षा के उद्देश्यों में तोड़-फोड़ करनी होती है। चाहे कहानी में सरकार दिखाई नहीं देती पर मास्टरों और प्रिंसिपल का व्यवहार क्या है? यह शिक्षा किस के लिए है? कहानी का चयन अच्छा है। जो लोग अपने आपको बदलने में लगे हैं, उनके लिए यह कहानी अन्दर रोशनी डालने में सहायक है।

'शैक्षणिक संदर्भ' का पूरा अंक लगभग पढ़ चुका हूँ। 'पहाड़ों में एक पुस्तकालय' थोड़ा विस्तार माँगता है। 'मिर्च जलन पेपरमिंट ठण्डक क्यों...', में मुझ जैसे कला-संकाय के विद्यार्थी को समझने में कठिनाई तो होती है पर लगता है कि इसे

दोबारा, तिबारा पढ़कर और कुछ सुझाए प्रयोग करके बात बन जाएगी। लेखक की निगाह इस बात पर गई कि एक ही तापमान पर यह जलन या ठण्डक का अहसास क्यों होता है। 'जब परमाणु दिखाई नहीं देता' में और बहुत-से प्रश्न छिपे हुए हैं, उन्हें अगले अंकों में बाँटते रहना।

'नन्हें हाथ लिखना सीखने की ओर' वास्तव में, प्रेरणादायक व परम्परागत शिक्षण विधियों पर ज़बरदस्त प्रहार करता है और मैंने तो अपने अध्यापक साथियों के साथ यह बात शेयर भी की है कि हमें भी अपने आपको बदल लेना चाहिए और शिक्षा/पढ़ना/लिखना ऐसा होना चाहिए कि यह खेल बन जाए। मुझे लगा सबसे महत्वपूर्ण लेख था, 'बोलीविया का खनन उद्योग', इसे पढ़कर लगा कि यह तो फोटो स्टेट या प्रिंट करवाकर पढ़ने-लिखने, चिन्तन करने वाले लोगों में बाँटा जाना चाहिए, ताकि मार्केट का धुँआ आँखों से हट जाए।

मुलख सिंह
सिरसा, हरियाणा

बच्चे जब गाली दें तो.....

पिछले अंक में हमने नितिन जाधव के अनुभव को - बच्चे जब गाली दें तो... - शीर्षक से प्रकाशित कर पाठकों से दो सवाल किए थे। प्रेमचन्द्र श्रीवास्तव, इलाहाबाद ने अपने विचार प्रेषित किए हैं, उन्हें यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं।

प्रश्न एक के सम्बन्ध में - प्रधान पाठक ने जो तरीका अपनाया, वह नितिन जाधव के लिए तो सर्वथा उचित लगता है, क्योंकि वे अपनी ज़ुबान से गाली निकालने में अपने को असमर्थ पा रहे थे। और, प्रधान पाठक के दबाव के कारण अत्यन्त संकोच और विवशता के साथ जो गालियाँ उनके सहपाठी ने दी थी, उसे दोहरा पाए। अतः जाधव जी के लिए तो यह कारगर है, क्योंकि ऐसा न होता तो अपने इस अनुभव को वे दूसरों से क्यों बाँटते। उन्होंने अपने गुरू के सन्देश को समझ लिया था। किन्तु जिस सहपाठी ने नितिन को गाली दी थी, शायद उसके लिए यह कारगर नहीं है, क्योंकि उसने जान-बूझकर गाली दी थी। वह यह भी समझ रहा था कि जाधव उसके पिता का प्रिय शिष्य है, इस कारण उससे ईर्ष्या भी करता रहा होगा। वह यह भी जानता था कि जाधव उसके पिता से शिकायत करने की हिम्मत नहीं जुटा पाएगा।

मेरे विचार से जाधव के सहपाठी पर जो प्रतिक्रिया हुई होगी वह यह कि मुझे तो सज़ा नहीं मिली और वह खुश हुआ होगा।

प्रश्न दो के सम्बन्ध में - मैं दोनों को समझाता कि गाली देना बुरी बात है। गाली बकने वाले की समाज में प्रतिष्ठा नहीं होती। जिस व्यक्ति को गाली दी जाती है, वह अपमानित महसूस करता है। किसी का अपमान करना अच्छी बात नहीं होती। गाली देने से गाली देने वाले की ज़ुबान गन्दी होती है। इसलिए गाली देने वाले विद्यार्थी से कहता कि उसने गलती की है और उसे जाधव से क्षमा माँगनी चाहिए। गलती को स्वीकार करना प्रायश्चित करने के समान है। दोनों को समझाता कि कटुता को भुलाकर एक-दूसरे से मित्रवत व्यवहार करें।

प्रेमचन्द्र श्रीवास्तव
सेवानिवृत्त विभागाध्यक्ष, वनस्पतिशास्त्र,
झूँसी, इलाहाबाद

फॉर्म 4 (नियम-8 देखिए)

द्वैमासिक शैक्षणिक संदर्भ के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के सम्बन्ध में जानकारी

प्रकाशन स्थल :	भोपाल	सम्पादक का नाम :	राजेश खिंदरी
प्रकाशन की अवधि :	द्वैमासिक	राष्ट्रीयता :	भारतीय
प्रकाशक का नाम :	अरविन्द सरदाना निदेशक, एकलव्य	पता :	एकलव्य, ई-10, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर भोपाल, म. प्र. 462016
राष्ट्रीयता :	भारतीय		
पता :	एकलव्य, ई-10, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर भोपाल, म. प्र. 462016	उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका इस पत्रिका	
मुद्रक का नाम :	अरविन्द सरदाना निदेशक, एकलव्य	पर स्वामित्व है :	अरविन्द सरदाना निदेशक, एकलव्य
राष्ट्रीयता :	भारतीय	राष्ट्रीयता :	भारतीय
पता :	एकलव्य, ई-10, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर भोपाल, म. प्र. 462016	पता :	एकलव्य, ई-10, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर भोपाल, म. प्र. 462016

मैं अरविन्द सरदाना, निदेशक, एकलव्य यह घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

अरविन्द सरदाना, निदेशक, एकलव्य, फरवरी 2012